

श्री गुरुभ्यो नमः
ज्ञान विकास (ज्ञान का विकासन)
श्री भगवत्
श्री भगवत् पब्लिकेशन
तिरुचेन्दूर

पुस्तक विवरण (छापा विवरण)

पुस्तक नाम	:	ज्ञान विकास
लेखक	:	श्री भगवत्
पुस्तक निर्माण	:	नित्यप्रवाह सत्संग 155, सी, 2वीं क्रॉस, न्यू फेलैन्डस, (आटो स्टाण्ड के पास) अलकापुरम शारदा कालेज रोड़, सेलम . 4.
छापा	:	पहला छाप अप्रैल 2009
प्रकाशन	:	श्री भगवत् पब्लिकेशन 102, कोर्ट स्ट्रीट , तिरुचेन्दूर – 628 215 04639 – 245377, 99442 15677
दाम	:	रूपये 10/-
छापाखाना	:	ग्राफिक पाईण्ट शिवसामी स्ट्रीट,सेलम – 1. 97901 58830, 96295 62301
पुस्तक वितरण	:	वाळग वळमुडन बुक अह केन्द्र 3 वाळग वळमुडन स्ट्रीट तिण्डुक्कल – 624 001 0451 – 2423311

एडिटोरियल

हम अपने जीवन में कई महानों की किताबें पढ़कर उनमें जो तरीखे लिखे गये हैं उनका अभुकरण भी कर रहे हैं । पर खोज की अन्त न हुई है – उसी समय हमारे मन में चिन्ता और प्रश्न आ ही रहे हैं । उनसे बताये गये सत्य आधा समझ में आखे या न आये के जैसे हैं । परन्तु मुक्ति पाने की कोशिश हम लगातार कर रहे हैं ।

श्री भगवत जी से मिलने के बाद, उनकी “ ज्ञान मुक्ति ” और “दुःखों का सुझाव ” आदि किताबों को स्पष्ट रूप में समझने के बाद भी हमें यह खोज समाप्त होती है । सभी प्रश्न और चिन्ता अपने आप दूर हो जाते हैं । महानों के ग्रन्थों में जो (आन्तारिक) सत्य है उसे हम आसानी से (ज्ञान) समझ सकते हैं । हम जाने या अनजाने अपने आप एक शान्त स्थिति प्राप्त करते हैं ।

आपके हाथ में दीख पढ़ने वाली यह ज्ञान विकास किताब 28-9-2008 सेलम में मनायी गई ‘चिन्ताओं का सुझाव’ ग्रंथ प्रकाशन उत्सव में भगवत्जी का जो भाषण था उसका लिखित रूप हैं । अगर आप इस ग्रंथ को पढ़ते समय मन खोलकर किसी पूर्वराय के बिना हर एक पंक्ति को पूर्ण रूप में पढ़ेंगे तो आपकी मुक्ति की रुचि सचमुच हो जाएगी । इस ग्रंथ में जो बातें हैं उसे कई अन्तों के साथ विस्तार रूप में लिखे गए ग्रंथ ही ‘ ज्ञान मुक्ति ’ तथा चिन्ताओं का सुझाव आदि ग्रंथ है । इसीलिए इस किताब को पढ़ने के बाद आपको शका होने पर उसका समाधान ये दोनों ग्रन्थ करेंगे । हमे जो स्वतंत्रता या मुक्ति का भाव उत्पन्न हुआ है वह सारे संसार वालों को उत्पन्न होना है । ऐसी एक सामूहिक विकास के विचार से हम इस कैंकेर्य में शामिल हुए हैं । यह ज्ञान सारे संसार भर में पहुँचता है यही हमारे जीवन का लक्ष्य है इस विचार से हम कार्यान्वित होने तैयार हैं ।

जी के ग्रंथों में :-

1. Don't Delay Enlightenment - अंग्रेजी
2. ज्ञान मुक्ति

3. चिन्ताओं का समाधान

4. ज्ञान भलर्वु – आडियो सी.डी.

ये सब मुफ्त में हमारे वेब साईट में आइए ।

वेबसाईट का पता : **www.nithyapravaaham.com.**

e-mail ID : sribagavathi@nithyapravaaham.com.

जी के " ज्ञान मलर्वु " ग्रंथ आडियो में भी है । चाहिए ताक हमसे संपर्क करके प्राप्त कर सकते है ।

एन. कैलासम, 94432 90559

वी.ए.पी. सरवणन, 99942 05880

एस. जीवमणि, 97891 65555

नित्यप्रवाह सत्संग

155, सी, 2वीं क्रॉस, न्यू फेलैन्डस,

(आटो स्टाण्ड के पास) अलकापुरम

शारदा कालेज रोड़, सेलम . 4.

लेखक परिचय

श्री भगवत् अपने 18 वीं आयु यानी कालेज में पढ़ते समय से ही आध्यात्मिक रूचि रखते थे । आध्यात्मिक ग्रंथों की खोज करके पढ़कर समझते थे ।

उनकी तीव्र खोज के फल स्वरूप अचानक एक दिन सत्य का दर्शन किए थे । स्पष्टता का उदय हुआ । खोज का अन्त हुआ ।

अपने 58 वीं (अटावन की आयु में) ज्ञान प्राप्त किया । कई वर्षों के प्रयत्न के फलसे जो ज्ञान प्राप्त हुआ उससे खुश होकर उन्होंने आनन्द का नाच न किया । आश्चर्य चकित हो गए । आधे क्षण में समझ पानेवाले इस ज्ञान के लिए चालीस वर्ष अथक परिश्रम किया – ऐसे वे आश्चर्य में पटु गए कि उन्होंने जान किया ज्ञान प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता नहीं है । आध्यात्मिक रूचि रखनेवाले इसे सुलभ से प्राप्त कर सकते हैं इस कारण में – इस ज्ञान को प्राप्त करके की रीति या रास्ता—सब (आसानी से) सुलभ रूप में जानने के लिए (विवरण) वर्णन करते हैं ।

सब आसानी से पहुँचने की रीति में सरल मीठे सरस व साफ—साफ होने के कारण जो उनके यहाँ आते हैं उनकी शंकाओ का समाधान साफ—साफ बताते हैं । अपने आप जो सुख—ज्ञान की प्राप्ति की उसे इस दुनिया वाले भी प्राप्त करना है – इसी भाव के आधार पर मार्गदर्शन करते हैं ।

अरंगनाथन, एम,ए., एम.एड

तमिल अध्यापक (Retd)

श्री साई निवास

तिरुच्चेंन्दूर

लेखक के ग्रंथ

1. Don't Delay Enlightenment	..	Rs.100
2. ज्ञान विडुतलै	..	Rs.50
3. कवलैकळक्केल्लाम तीरु	..	Rs.70
4. ज्ञान मलर्वु	..	Rs.10

आरंभ ग्रंथ

1. आन्म ज्ञान – रहस्य	..	Rs.30
2. अनुष्टान आन्मीकम्	..	Rs.120

ग्रंथों के लिए

तिण्डुककल	:	वाळग वळमुडन, पुत्तग मैयम – 0451-2423311
चेन्नै	:	श्री विद्या बुक सेन्टर, मयिलाप्पूर 044-24611345, 24511141 मुरळी पब्लिकेशन्स, 9444050089, 044-24350089
तिरुच्चि	:	जैन संगअग नूळगम, 0431 – 2701239 इन्टरनेशलन बुक्स, 0431-2703743, 2711599
कोवै	:	विजया पतिप्पगम, 0422-2394614, 2382614
मदुरै	:	डा. आर. सरवणकुमार, 94434 71456 सर्वोदय इलक्किय पण्णै, 0452-2341746
सेलम	:	श्री. एन. कैलासम, 94432 90559 श्री. वी.ए.पी.सरवणन, 99942 05880 श्री. एस.जीवमणि, 97891 65555
नेल्लै	:	अरुल नन्दि शिवम, 0462-2339692
तिरुवण्णामलै	:	श्री. शेशाद्रि स्वामिकळ आश्रमम

ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढे कुछ सज्जनों का अभिप्रायः

‘आध्यात्मिकता की खोज में था । आध्यात्मिक विषयों में विरक्त और अतृप्त होने की स्थिति में ज्ञान की प्राप्ति इतना सरल और किसकी खोज करना है आदि इस ग्रंथ से मालुम हुआ । इस ग्रंथ को दुनिया भर में फैलाना है । तत्व को क्षितिल किए बिना सरल रूप में होना ही इस ग्रंथ की विशेषता है । एक सरल व सहज मनुष्य ही इतना सरलरूप में कह सकता है ।

— श्री मुहम्मद अब्दुल कादर, अडिशनल चीफ इन्जिनियर, नेईवेली.

प्रकाश ज्योति — विकास (Enlightenment) इतना ही है ? इसीकेलिए इतना वर्ष संघर्ष बाकी ज्ञानियों के कहने से श्रेष्ठ रूप में इस ग्रंथ और क्या विशेषता है ? इस ग्रंथ की विशेषता यही है, ऐसे किसी ने न कहा है । इस ग्रंथ को पढ़ने से मन का आन्तरिक संघर्ष घटकर भय निभर्य हो गया है । जो भी पढ़ते उसे साफ और नये रूप में समझ सकते हैं । सब कुछ पा लिया है; पाने के लिए और कुछ नहीं है — यही भाव प्राप्त हुआ है ।

— श्री आर सरवणकुमार, होमियोपति डाक्टर, मदुरै.

वेदाद्री महर्षि से दीक्षा पाते ही जो खुश हुआ, इस ग्रंथ को पढ़ने के दिन पुनः प्राप्त हुआ । इस ग्रंथ को संसार भर में फैलाना चाहता हूँ ।

— श्री वेद सुब्बैयया, मनवळक्कलै प्रोफेसर, कोवै.

‘मैलने जिन विचारों को लिखने के लिए सोचा ये सब इस किताब में है । इस किताब का नाम मैने रखा है । Essence of All Yogas. इस ग्रंथ का जो समझ लिए है अनको ज्ञानी कह सकते है ।

— श्री राधाकृष्णन, मनवळक्कलै प्रोफेसर, नागरकोविल

‘किताब बहुत अच्छा है । हर एक वाक्य तत्व व हर एक शब्द को गौर से पढ़ना है ’ ।

— श्री आरिवानन्दम, बच्चों के विशेष वद्य, तारापुरम

‘मेरे पास लगभग 3000(आध्यात्मिक) धार्मिक किताबें हैं । सबको पढ़ लिया है । पर उनमें मुझे पूरा का पूरा बदल दिया । जाचा ग्रंथ ‘ज्ञान मुक्ति’ है । इसमें जो स्पष्टत और सरलता है वह और किसी में नहीं है । 15 बार मैंने इस पढ़ लिया है । और भी पढ़ने की इच्छा है ।

— श्री शरणकुमार जेन संग आन्तरिक पुस्तकालय, तिरुच्चि

‘ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढ़ते ही मैं बिलकुल बदल गया । अर्थात् छोटे बच्चे जैसे उछलते कूदते हैं उसी प्रकार मैं भी खुशी में कूदने लगा ।

— श्री पार्थसारथी, इन्जनीयर, विरुदुनकर (55 आयु)

‘ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढ़ते – पढ़ते ही मुझे व्याधिस्थ बननेवाले विषय कम होते जा रहे हैं । घटते आ रहे हैं ।

— श्री कैलासम, होमियोपति कालेज छात्र,

पूर्व बैंक अधिकारी, सेलम, (आयु 50)

इस ग्रंथ में बताये रास्ते पर चलने से ध्यान करते की आवश्यकता नहीं होती है ।

— श्री षण्मुखम् (प्राध्यापक) आर.वी.एस. इंजनीयरिंग कालेज, तिण्डुक्कल.

(श्री भगवत् जी से बातें करते करते समय ‘ध्यान की आवश्यकता है या नहीं ?’ ऐसे पूछते समय उन्होंने बताया, ‘ये सब टानिक के जैसे है व्याधि को दूर नहीं करता, ज्ञान की स्पष्टता व्याधि को दूर करनेवाला औषध है । ध्यान में खुशी और मन भरपूर की संभव ना होने पर जिनकी रुचि है वे अनुसरण का सकते हैं)

धार्मिक तत्व ‘ज्ञानने के लिए दुर्लभ है, विस्मय कर देनेवाले हैं, बड़े परिश्रम के हैं – ऐसे ही कई लोग सोचते हैं, पर ये समझने सरल है, संतोष देने वाले हैं, थकावट न देनेवाले हैं । ऐसे आश्चर्यजनक रीति में विस्तार रूप में बताकर ‘ज्ञान मुक्ति’ नामक नये ग्रंथ द्वारा ज्योति के मार्ग पर ज्योति दर्शति है ।

वैज्ञानिक अन्नति के प्रचुरता के इस युग में आध्यात्मिक विज्ञान बहुत आसानी से समझनेवाली है — ऐसे ये जो सत्य में बताते हैं वह हर्षजनक है । बहुत कम ही शब्दों में बहुत बड़े विषय को हमें स्पष्ट रूप में साफ—साफ बताए हैं ।

— श्री तेनमोळी कल्लै अरुटसेलवन, ओड्डनसत्तिरम्

सेलम डिस्ट्रिक्ट इळम्पिललै के मनवळक्कलै असिस्टेन्ट फ़ोपेसर ज्ञानप्रकासम जी 500 प्रतियाँ खरीदकर मुफत में सबको दिए है । उनके नाम के अनुसार ही 'ज्ञान मुक्ति' ग्रंथ उनमें जो नाम उसे और भी प्रकाशित कर दिया है ।

अगर ज्ञान मुक्ति ग्रंथ एक आदमी रूची से पढ़लेताहै तो कमसे कम 10 प्रतियाँ खरीदकर अन्य लोगों कोदिये बिना नहीं रह सकता है । सुगन्ध से भरा एक फूल विकसित होता है तो सुगन्ध तो फैलेगा ? मैंने जिस ज्ञान की प्राप्ति की ज्ञान की प्राप्ति सारे संसार को मिलता है सारी बसुन्धरा कोमिलना है — यह बात तो निरीह नहीं है ।

मेरे छोटी बुद्धि के अनुसार में यह ग्रंथ सारे संसार पर शासन करनेवाला है । पढ़े लिखे दोस्तों की वृप्ति, प्रशंसाएँ व इस ग्रंथ को फैलाने की जो उत्सुकता वह बहुत आनन्ददायक है । कई आध्यात्मिक ग्रंथों को पढ़े लिखे बहुत कम ही लोग बुढापे में बहुत कम ही ज्ञान की ओर मोढते है । पर युवावस्था में ही 'ज्ञान मुक्ति' ग्रंथ पढना / पढान्त बहुत अच्छा होगा ।

श्री भगवत् जी चालीस वर्ष के परिश्रम से एक कुआँ खोद लिए है । हमें भी कुआँ खुदे बिना उसी कुएँ से पानी लेकर उसका सेवन करना चाहिए — उपयोग करना चाहिए ।

कई लाभदायक खोंजों के समान खबर इस ग्रंथ में है । जोलोगयह ग्रंथ पढ़ते हैं उनकी प्रधान जिम्मेदारी है कि इसे युवाओं तक पहुँचाना है ।

पढ़े लिखे सब पढ़कर, सुधाकर अन्य लोगों को भी उन्नति पाने का रास्ता दिखाना है । सह उन्नति पाकर जियें ।

— तिण्डुक्कल, जयगोपाल

सेलम के होमियोपति डा. विजयलिंगम जी को इस ग्रंथ को पढ़ने देने पर देखते ही सोचाकि ये भी इसे ओशो के जैसे लिखे गये होंगे । बताया कि आजकल के ध्यान संस्थाएँ चलनिवाले जो कहते हैं उसे ही ये भी बताए गए होंगे । पर पढाई पूर्ण होने के बाद मैं इसी लिए बहुत खुश हुआ कि जिस सत्य को अन्य धार्मिक संस्थाएँ लोगों को समझाने का अथक परिश्रम कर रहे हैं उसे जीने बहुत सरल रूप से समझाओ है । कई ध्यान संस्थाएँ करने वाले कार्य यही ग्रंथ ही करेगा ।

—श्री जे. कार्तिकेयन, विन विन इण्टरनेशनल, चेन्नै

ज्ञान विकास

सब सोचते हैं कि ज्ञान प्राप्त करना ही आध्यात्मिक क्षेत्र में प्राप्त होने की ऊँची स्थिति है । यह आध्यात्मिक लोगों का विचार है ।

पर साधारण मनुष्य तो सोचते हैं कि सब दुःखों से मुक्ति पानी काफी है ।

चिला ही हमें बहुत सताता है । दुःख के बिना रहने पर अच्छा होगा । समस्याओं के बिना रहने पर अच्छा होगा — यही सब लोग साधारण रूप में सोचते हैं । पर सच तो यह है कि ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में ही चिन्ताएँ दूर होती हैं । चिला दूर होने की स्थिति में ज्ञान का अस्थित्व होता है । दोनों एक ही हैं । दुःख से दूर होना एक है और ज्ञान प्राप्त करना एक है । दोनों अभिन्न स्थिति में एक होते हैं ।

अपने अमा न होनेवाले के चरण में आये बिना

मन की चिला बदलना नहदुर्लभ है । — तिरुक्कुरळ

अपने उपमा न होनेवाले के चरण में आना ही मुक्ति की स्थिति है । उस अन्तिम स्थिति कोही अपने बराबर न होने वाले के चरणों में आना कहते हैं ।

ज्ञान स्थिति प्राप्त करनेवाले को ही चिन्ता ही होती है – इस बात को तिरुवल्लुवर ने 2000 वर्षों के पहले ही जान लिया है ।

मेरे बचपन में मैं जे कृष्णमूर्ति के ग्रंथ उत्सुकता से पढ़ा करता था । वे भी इसे ही कहते हैं । वे बताते हैं कि समस्याओं से चिन्ताओं से मुक्ति पाना है तो पहले उसे पहचान लेना है । यह भी बताते हैं कि उनको एक बार ठीक तरह से समझ लेंगे तो निरन्तर उन समस्याओं से छूट सकते हैं ।

हम भी चिन्ताओं और समस्याओं समझ हो लेते हैं । पर न मालूम है कि निरन्तर उनसे छूटकारा पा लिया है । चिन्ता या डर हमें आ जाता है । उनके कहेनुसार सोच विचार करने पर उस समय ऐसा दीख पड़ता है कि थोड़ा सा समझ लिया है और उन समस्याओं से छूटकारा पा लिये हैं । पर और एक परिस्थिति में चिन्ता व भय फिर आ जाते हैं ।

इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं हम ने उन समस्याओं को ठीक तरह से न समझने की गलती की ।

किसी गहरी बातकह रहे हैं । बाहरी रूप से ही हम किसी को समझते हैं । गहरे रूप में हमने नहीं समझ लिया है – ऐसे मैंने सोचा ।

दोस्तके घर जाकर एक (ग्लास) प्याला पानी माँगते हैं । अगर ये पानी देते हैं तो ठीक होगा । उसके बदले वे ऐसे कहते हैं कि आप एक कुआँ खोद लेंगे तो लगातार पानी लेकर पीसकते हैं । जे.के. ने जो बताया वह ऐसा ही है मुझे ऐसे सूझ पड़ा ।

साधारण समस्या का समाधान पूछने पर, अगर आप ज्ञान प्राप्त करेंगे तो इस समस्या का (सुझाव) समाधान हो जाएगा ऐसे उनसे कहने पर भी ऐसा ही दीख पडता है ।

एक ग्लास पानी के लिए कुआँ खोदने को कहा मुझे ऐसा प्रतीत हुआ ।

चिन्ता और भय से छूटकारा पाने के लिए ज्ञान प्राप्त करना—ऐसे बताते हैं ज्ञान प्राप्त करना क्या साधारण विषय हैं?

यह तो बहुत असाध्य विषय है ? छोटी समस्याओं के लिए भी ऐसे ज्ञान प्रति ही जवाब बताते हैं ।

तीस वर्षों से दोनों को मिलाकर न देख पाने का हलछल में था । फिर ही समझ में आया, समस्याओंसे छुटकारा पाना जितना सुलभ ही वैसे ही ज्ञान प्राप्ति भी उतना सुलभ है ।

हमें मानसिक रूप में कई समस्याएँ होती हैं । उन सबको मिलाकर एक नाम दिये हैं – चिन्ता ।

एक पेडे की कई शाखाएँ होती हैं । पर इतनी शाखाओं का धरण करनेवाले पेड का मूल भाग एक ही है । उनको काट देने पर सारी शाखाएँ पेड के साथ गिर देंगी ।

हमारी आन्तरिक समस्याएँ भी ऐसी ही हैं । हमारी सब मानसिक समस्याओं को एक ही आधार शिला होती है । उस आधार शिला के समझकर उसे दूर करें तो सब समस्याएँ दूर होती हैं ।

स्वेटर बुनना अपने देखा होगा हमारे शरीर में ठीक तरह से फिट होने के लिए नापकर की सूत से बुनते हैं । कई दिन सावधानी से बैठकर बुनते हैं । उस स्वेटर को सुन्दर कलर होता है, हाथ होता है जेब होते हैं, तरह तरह के (फूलकारी भी) फूल के कारीगरी भी होते हैं । पर उस स्वेटर के एक सूत को लेकर खींचते हैं तो पूरा स्वेटर खराब होकर निराह सूत हो जाएगा ।

उसी प्रकार हमारी समस्याओं के क्रेन्द्रित भाग को समझकर दूर करें तो हमारी सारी समस्याएँ धुलमिल होकर पूरा का पूरा मिट जाती हैं ।

हर एक समस्या को अलग-अलग हल का पता लगाना – ऐसी बात नहीं है । सब समस्याएँ पूरा का पूरा हल हो जाएँगी ।

ज्ञान प्राप्ति की बात की इसमें सम्मिलित हैं । मन की समस्याओं का हल पाना भी एक ही है, ज्ञान प्राप्ति भी एक ही है । ऐसे मान लीजिए कि हमारे मन में एक चिन्ता पैदा होती है । एक उदाहरण भी लेंगे ।

हमारी अपना एक कीमती चीज़ नष्ट होकर नाश होता है । उस चीज़ का नाश हमारे मन में व्याकुलता पैदा है ।

अगर हम आग में हाथ लगाते हैं तो हाथ दुग्ध कर देना है । पीढा होती है । पर चीज के नाश होना हमारे मन में क्यों पीढा पैदा कर देता है ?

चीज़ को हम अपने मन के अंश बना देते हैं, 'मेरी चीज़ है' – ऐसी एक योग्यता उसे दे देते हैं ।

चीज हम से दूर होती है । नाश हो जाती है । वह क्यों मन में वेदना पैदा कर देती है ?

उसका नाश होना हमें न अच्छा लगता है, हम चाहते हैं कि वह न नाश हुआ था । पर यह तोसच है कि वह चीज़ नाश हो गयी है । वह चीज 'मेरी चीज़ है' – ऐसे मनोवैज्ञानिक रीति से हम उसे लेते हैं । मेरी मनोवैज्ञानिक चाह तो यही है वह चीज नाश न होना ।

हमारा मन ही हमें दिखाता है कि वह चीज़ नाश हो गयी है । मन और भी बताता है कि वह चीज़ नाश न होना है ।

नाश हुई चीज़ और हमारी इच्छा है कि वह न नाश हुआ हो । ये दोनों तो एक दूसरे के विपरीत है ।

जो कुछ होता है, हमारी सारी प्रतीक्षाएँ उसके विपरीत होती है और दोनों के बीच एक डकराव सा होता है । यही ठकराव हमारे मन में ही होता है ।

मन का एक भाग कहवा है – यह मेरी चीज़ है, इसका नाश न होना है –

मन का दूसरा भाग कहता है – चीज मुझसे दूर हो गया है, वह चीज नाश हो गई है । ये दोनों भाग हमारे मन में ही चलते हैं – कार्यान्वित होते हैं । ये दोनों भाग एक दूसरे से भिन्न होने से हम में भी एक विपरीत भाव – मन का मुटाव होता है । इसे मन की वेदना श्या मन का क्लेश बताते हैं ।

ठीक है, मनो वेदना हुई है । बाद में हम क्या करते हैं ? क्या मनो वेदना को हम स्वीकार करते हैं ?

मनो वेदना हमें दुःख देती है । इसलिए मनोवेदना को भी नहीं चाहते हैं ।

पहले जो घटना घटी – हमारी चीज़ का नाश रूपी घटना हमअच्छा नहीं लगता । इसलिए हमें मनोवेदना होती है ।

अब तो हमें यह मनावेदना भी अच्छा नहीं लगता है ।

ऐसी ही हमारीयह घटना कितनी भी बार होने पर भी हम तोउतनीबार मनमुटाव रखते हैं ।

इससे हम क्या खोजते हैं ? यह जान लेते हैं कि मनमुटाव होना ही समस्याओं काकारण है ।

मनमुटाव न होने पर समस्याएँ न होती है – ऐसे हमें प्रतीत होता है । हम सोचते हैं कि मन मुटाव के बिना कार्यान्वित होते हैं तो अच्छा होगा ।

इसका अर्थ क्या है ?

हम मनमुटाव के विपरीत कार्यान्वित होते हैं और बिना मनमुटाव के रहना ही ठीक है ।

ऐसे अनजाने ही हम अपने कार्य के हर एक कदम में मनमुटावला देते हैं ।

अन्त में मनमुटाव के विपरीत भी कार्यान्वित होते हैं । क्यों ऐसे मनमुटाव रखते हैं ?

हम तो मूर्ख नहीं है । हम जो कुछ करते हैं उसका बुद्धि के आधार करण होगा ।

इसका भी एक कारण होगा कि हम ऐसे मनमुटाव रखते है । मनमुटाव करना थी किसी एक कारणहै – ऐसे दीख पडने के कारण ही हम ऐसे मनमुटाव करते हैं ।

हम क्यों ऐसे विपरीत होते हैं ?

हम चाहते हैं कि हमें जो घटनाएँ जैसे जैसे घटती है वैसे वैसे न घटना है ।

हमारी इच्छाएँ ही अपने मनमुटाव के कारण बनते हैं। हम जो चाहते हैं – वह घटना है तो हमें आनन्द होता है। हम जो चाहते हैं वह नहीं घटता है तो दुख होता है।

हम सुख ही चाहते हैं। ऐसे सुख की प्रतीक्षा करनेवाले एक भाव हममें हैं।

सुख की प्रतीक्षा करनेवाले कार्य ही चाहिए या नहीं चाहिए के भाव का कारण बनते हैं।

जब तक हमारा कार्य सुख की प्रतीक्षा में होते हैं तो यह सम्भव नहीं है कि मनमुटाव न होने देना है।

अब तो दूसरी सवाल उडती है।

सुख की ओर अग्रसर हुए बिना और किस तरह हम कार्यान्वित होते हैं ? – यह प्रश्न उठता है।

हम किस रीति से कार्यान्वित हैं उसी रीति से हम कार्यान्वित होते आ रहे हैं। हमारी हर एक कदम में हम ऐसे कार्य करते हैं।

अगर हम ऐसे निर्णय कर लेते हैं तो सुख में रूचि रखे बिना कार्य करना ही ठीक है।

सुख में रूचि न रखनेवाली स्थिति ही अच्छा है। इसलिए यह मुझे चाहिए ऐसे, हमारी सुख की रूचि को और एक पहलु में बद देते हैं।

हम चिन्ताओंसे छुटकारा पाना चाहते हैं बिनाचिन्ता की स्थिति चाहते हैं यह भी एक चाह है।

हम इस खोज को इस शीर्षक में ही लिए हैं कि चिन्ताओं से वेदनाओं से छुटकारा पाना है। पर हमारी पद्धति या प्रयास मनमुटाव ही पैदा करता है। यह तो हमारी चिन्ताओं को कायम करने के जैसे बन जाते हैं।

सुख प्राप्ति की रूचि ही चिन्ताओं के कारण बन जाती है। पर हमारी चिन्ताओं से छुटकारा पाने सोचना सुख प्राप्ति की और एक पहलू है।

आगे हम क्या करें ?

हम जो करते हैं वह हमारे विरोध ही बन जाते हैं ।

जिस पद्धति से हमें समस्याएँ होती हैं उसी पद्धति को हम फिर से लेने वाले बन जाते हैं ।

यही हलचल हमें होती है कि किस तरह इसका सुझाव देख लें । यही हमारे जीवन की समस्याओं का केन्द्र बिंदु बनता है ।

ज्ञानी अपने जीवन में इस केन्द्रित बिंदु से ही सुझाव पालिये हैं । ऐसे वे कैसे प्रयास कर लिए है ?

कई ज्ञानियों के जीवन में इस केन्द्र बिन्दु में एक ही जैसे सुझाव ही पा लिए हैं । वही उनके जीवन में प्रज्ञान में विकसित हुए है ।

बुद्ध को हम जानते हैं । वे प्रज्ञान प्राप्त करना और दुःखों का सुझाव पाने निकल गए हैं । पत्नी बच्चे, सम्पति सुख, राजकाज सबको तुच्छ समझकर व्यागकर निकलते हैं । सन्यासी जीवन को अमनाए । जंगा, पर्वती में घूमकर घोर तपस्या अपनाते हैं ।

कई गुरुजनों से उपदेश पाते हैं । शरीर और मन को दुःख पहुँचानेवाले कठिन अभ्यासों को अपनाते हैं ।

उन्होंने जिन अभ्यासों को अपनाया उनसे बहुत अनोखी अनुभवा को प्राप्त कर लिया ।

योग और ध्यान में कई तरह के अभ्यास के तरीके और अनुभव होते हैं । अभ्यास और अनुभवों अभिन्न हैं । अभ्यास के अनुसार अनुभव प्राप्त होते ही हैं । बुद्ध भी कई प्रकार के अभ्यासों को अपनाते हैं । उसका फल प्राप्त हुआ । पर उनको मालूम है कि ये सब वे नहीं है कि उन्होंने जिसकी खोज की । दुःखों का सुझाव पाना रूपी जवाब उनके प्रयासों से नहीं दिया गया है ।

आगे क्या करेंगे ऐसे सूझ बूझ के बिना कि कर्तव्य में एक पेड के नीचे वे बैठे जाते है ।

जिसकी खोज में वे आगे, वह उनको अपने आप मिल गया । किसी तरह के प्रयास के बिना उनकी खोज का प्रज्ञान उनको प्राप्त हुआ ।

ऐसी ही स्थिति जे, कृष्णमूर्ति के जीवन में भी हुई । जे के ओर उनके भाई नित्या आदि के बारे में सुने हए होंगे । ये दोनों भविष्य में संसार को बोध करानेवाले धार्मिक नेता बन जाएँगे – ऐसे तियासाफिकल सोसाइटी से खोज निकालते हैं ।

उनके विशेष धार्मिक अभ्यास दिये जाते हैं ।

जे के को इससे कुछ अपूर्व शक्ति दिल गई है । ऐसी शक्ति को पाकर भी उन्होंने न प्रकट किया कि उनकी ज्ञान की स्थिति प्राप्त हुई है । जे.के और उनके भाई दोनों हैं । ज्ञान स्थिति की प्रतीक्षा में हैं । अचानक एक दिन नित्या बुखार में पड़ते हैं ।

जे.के. अपने अपूर्व शक्ति की सहायता का प्रयोग करना चाहते हैं । अपने भैया की रक्षा करने कोशिश करते हैं ।

पर एक दिन किसी की बिना प्रतीक्षा के नित्या सअचानक जाते हैं ।

ये दोनों मिलकर ही रहकर संसार को बोध कराते हुए संसार का मार्गदर्शन करेंगे – संसारवाले की प्रतीक्षा में हैं ।

पर ऐसे बतानेवालों में एक अकाल में मर गया । जे.के. को कुछ भी नहीं झूझता । उनके दुःख न सहा जाता ।

जे.के. और उनके भाई 8 आयु से ही माँ-बाप से अलग हो चुके हैं । वे दोनों माँ-बाप और उस भाई बहनों से अलग 8 आयु से युवावस्था तक एक साथ रहते थे । दोनों एक दूसरेकी साहयक बनकर रहते थे ।

कभी भी ये दोनों पूर्ण ज्ञान से निकलेंगे इस प्रतीक्षा की स्थिति में नित्या मर गया ।

जे.के. मनोवेदना में तडपते हैं । किसके यहाँ जाकर वे तसल्ली पा सकते हैं ?

उनकी अपूर्व शक्ति भी उनके साथ छोड़ गई ।

नित्या केमरण को स्वीकार करने के बजाय उनको और कोई रास्ता नहीं सूझा । उस दुःख का स्वीकार करने के बजाय कोई रास्ता नहीं मालूम हुआ ।

उस दुःख को कैसे ही स्वीकार करके उसके साथ रहते समय —उनमें यह परिवर्तन हुआ ।

किसके लिए वे इतने कालप्रतीक्षा करते थे, —वह ज्ञान विकास उनमें आगया ।

उनकी अपूर्व शक्ति उनके साथ छोड़ने की स्थिति में, अपने सारे दुःखों को

— मन ही मन स्वीकार करने की स्थिति में,

— उनमें वह ज्ञान —विकास हो गया ।

भगवान् रामण महर्षि के बारे में जानते हैं उनके जीवन में भी ऐसा ही हुआ । 14 से 16 आयु के बीच युवावस्था में उन्होंने ज्ञान प्राप्ति की ।

उस आयु में वे किसी प्रकार की आध्यात्मिक अभ्यास को न अपनाया ।

एक विधार्थित दिन वे मदुरै में हैं । अचानक उनको मरणभय होता है । ऐसे डरते हैं कि मरण ही आ गया है ।

आमतौर पर बचपन में ऐसे भय होने पर क्या करते हैं ? ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले ईश्वर से प्रार्थना करके रक्षा करते थे देने की विनती करते हैं । या बड़ों के शरण समें आते हैं । माँ—बाप बड़ों या दोस्तों के यहाँ जाकर तसल्ली पा लेते हैं । मरणभय से निवृत्ति पाने—ऐसे किसी कार्य करते हैं ।

पर वे ऐसे न करके मरण भय को वैसे ही स्वीकार करने लगते थे । मरण माने क्या है ऐसे ही स्वीकार करके मरण को ऐसे अभिनय करके देखते थे । इससे उनकी जो मन की समस्या थी उसे प्रत्यक्ष सामना करने की स्थिति हुई ।

उस स्थिति में ही उनकी एक मुक्ति गति मिल गई । सारे दुःखों से व्यथाओं से छुटकरा पाने की एक मुक्ति की स्थिति मिल गई ।

भगवान् रामण भी अन्त तक इसे ही कह रहे थे । उन्होंने जो अनुभव मदुरै में प्राप्त किया वही उनका सच्चा ज्ञानानुभव है कि ऐसे ही वे कहा करते थे । उसके बाद जो मिला वे सब अन्य प्रकार के है ।

सब से निवृत्ति की स्थिति में कि कर्तव्य मूढ में वे शान्त रूप में बैठते समय उनको समधि में लगने का अनुभव होने लगा ।

उनको समाधिस्थ होने का अनुभव ही उनके विज्ञापन बन लगया ।

भगवान रमण जब सच्चाई का दर्शन करते तब एक युवा बनते हैं । एक बालक । अपने लिए वह स्थिति कैसे प्राप्त हुई—यह भी नहीं बता सकते ।

वे जब अन्य व्यक्तियों को उपदेश देते थे कहा करते, "तुम अपने आप पूछ लो "मैं कौन हूँ" ?

पर ऐसे पूछने पर उनको भी स्पष्टता हुई । ऐसे ने उस दिन पूछा करते तो उनको भी वह ज्ञान न प्राप्त हुआ होगा ।

पर उन्होंने ऐसे किसी लक्ष्य के बिना मरणभय को प्रत्यक्ष देखा है ।

बुद्ध भी ऐसे ही सभी अभ्यासों से कोशिश करके कुछ भी न कर सकते की स्थिति में अपनी समस्या को — दुःख को प्रत्यक्ष देख है ।

जे.के. को भी अपने आयास के प्रयास से ज्ञान की प्राप्ति न हुई । किसी भी समस्या हो उसके हल करने हमारी तरफ से किसी भी कोशिश न किए बिना उसे ऐसे ही सामना करते समय—हम कुछ भी न करके सभी समस्याएँ अपने आप समाधान होजाती हैं ।

बचाने सोचना या बदलने—सोचना इस समस्या को और भी मजबूत बना देती है ।

उस समय सुख की ओर लगन और विपक्ष में कार्यान्वित होना — ये हमारी समस्याओं को और मजबूत करा देते हैं ।

समस्याएँ तभी हल हो जाती हैं जब ऐसी स्थिति में आते हैं कि आगे करने के लिए कुछ भी नहीं है ।

क्यों ऐसे हल हो जाते हैं ?

जब हम समस्याओं के प्रति कुछ भी नहीं करने की स्थिति में हैं । तब समस्याएँ वैसी ही होनी चाहिए ? वे क्यों ऐसे समाधान हो जाते हैं ।

संगीत की पेटी को देखा होगा । उदाहरण के लिए डार्मोनियम् पेटी को लंगे । उसमें ध्वनि पैदा करनेवाली रीदस होती हैं । हर एक रीदस को

दबाते ही एक एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है ।

एक रीदस को एक बार दबाते हैं । एक प्रकार की संगीत प्रकट होता है । प्रकट होने वाला संगीत कितनी देर तक होगी ?

एक रीदस को हम एक बार दबाते हैं तो उससे होने वाला संगीत की आयु सिर्फ आधा ही क्षण होगी । वह गीत और भी चाहिए तो फिर से दबाने से ही होगा ।

एक बार दबाने से हुआ गीत आधा ही क्षण रहकर अपने आप गायब हो जाता है ।

उसे निकालने के लिए हमें प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है । वह आएगा, फिर अपने आप वह गायब होगा ।

हमारे मन के अनुभव भी ऐसे ही हैं । मनोभाव की सभी समस्याएँ, सभी अनुभव,

हम किसी एक रीदक को दबाने से हुए हैं । उनके आयु भी आधा क्षण ही है ।

पर हम उस संगीत की गायब हो जाने की इच्छा से फिर से अनजाने ही उस रीदस को दबा देते हैं । श्रुति को कम करने रीदस को दबा देते हैं । इसलिए गीत या श्रुति फिर से नयी बन जानी है । हम फिर से रीदस दबा देते हैं तो, पहले जो संगीत वह अपने आप चली होगी ।

मन की समस्याओं को हल करने या दबाने सोचा तो वह फिर से आ जाती है । हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है । ऐसे हमें जान लेना है । उसे तलाश करना ही ठीक खोज होगी । सच्ची खोज है ।

ज्ञानी लोग ऐसे ही खोज श्कर लिए हैं । किसी प्रकार परिश्रम करके, अन्त में किसी भी प्रयत्न से फायदा न होने से —

— एक प्रकार की किंकर्तव्य विमूढ में

— इसकी जाँच कर लेते हैं ।

ऐसे ही सभी ज्ञानी स्पर्धा करते हुए असफलता पाकर,

– आप भी सभी तरीको में परिश्रम करके प्रतिस्पर्धा करके असफलता पाने की स्थिति में,

– इसे खोज करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि हमारी मनोभावना ऐसे ही कार्यान्वित होती है ।

हमारी प्रत्यक्ष खोज के द्वारा हमें जाँच कर लेना काफी है ।

– ज्ञानीगण प्राप्त किए ज्ञान हम भी प्राप्त कर लेगे ।

उस स्थिति में हम देख सकते हैं कि हमारी सारी समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं ।

हम यह जान लेते हैं कि हमारे मन की समस्याओं के सामना करने हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं । इस स्थिति में हमारे कुछ भी न किए बिना हमारी समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं ।

यह समाधान क्या तात्कालिक है ? पुनः पुनः फिर से हमें जाँच करते ही रहना है ? यह निरन्तर नहीं है । यह हल कितने काल तक उपयोगी होगा ?

इस संदर्भ में हमें मन के कार्यान्वित होने के बारे में भी कुछ जान लेना है ।

हमारे पास तो एक ही मन है । पर उसे अच्छी तरह जान लेने के लिए उसे अन्तः मन व बाहरी मन ऐसे दो भागों में बाँट लें ।

हमारे अन्तः मन को सक्कान्शियस माईड या आन्तरिक मन के नाम से कह सकते हैं । वही हमारा स्वभाव है । वह एक संगीत वाधा के जैसा है । एक हारमोनियम पेटी को लेंगे तो कई प्रकार के स्वर पैदा करनेवाले रीडस होंगे । हमारे मन में शकुछ अंश न होना है ऐसे कहना म्यूसिकल इन्स्ट्रुमेन्ट में कुछ रीडस लेकर फेंकने के जैसे है । ऐसे एक-एक रीडस को लेते हैं तो म्यूसिकल (इन्स्ट्रुमेन्ट)ही न होगा । हमारे स्वभाव में सब अंश पंजी होगा । एक परिस्थिति में हमारा आन्तरिक मन उसके साथ कार्यान्वित होने से संगीत प्रकट होने के जैसे का एक अनुभव पैदा होता है । प्रकट हुए अनुभव ही बाहरिक मन है ।

बाहर आने का अनुभव आधा क्षण ही होगा । वह अपने आप चला जाएगा । उसे अपनी ढंग से आकर जाने देंगे तो एक खुलला प्रवाह के जैसे हो जाएगा । अनुभव अपने आप कार्यान्वित हो जाने की स्थिति हो जाएगी । हम अपने अनुभवों के न सामना करने की स्थिति हो जाए थी । उस स्थिति में हम कार्यान्वित होजाते हैं तो हमारा अनुभव दूसरे परिमाण में हो जाते हैं ।

हमने देख है कि हमारा आन्तरिक मन हमारा स्वभाव है । हमारे अनुभवों से ही वह बन जाता है । अनुभवों का भण्डार होता है । हमारा स्वभाव भी तब नये रूप में परिणत होते है जब हम नये नये अनुभवों को प्राप्त करते ही रहते हैं ।

इसके द्वारा हमारी संगीत पदूलि को ही श्रेष्ठ समृद्धी बना देते हैं । यह वृद्ध अपने आप होती है । कालक्रम में बनता है । यह हमारे यत्न से न बना है ।

इससे आपके मनोभाव ही बदल जाता है ।

एक मोटर गाडी को तीव्र चलताते जाते है । पर आपको आगे चलने रास्ता न होकर खतम होता है । आप उसी वेग से बैक डालते है तो ठाडी को क्या होगा ? आपकी गाडी अपने आप वापस आएगी । स्टियरिंग के चलाये बिना गाडी खुद लोटती है ।

उसी प्रकार जब हम जान लेते है कि करने के लिए कुछ भी नहीं है तब मन की गीत-विचार और किसी पहलु में हो जाता है ।

यह जानकारी पाने तक हमारा मन इसी संग्रास में होगा कि हर एक अनुभव को कैसे बदल देंगे । यह जानकारी प्राप्त करने के बाद जो मन होनी बात को अनहोनी बनाने संग्राम करनेवाला है, वैसे न करने का मन बनता है । जो कुछ होता है उसे स्वीकार करनेवाले स्वभाव आ जाता है ।

ऐसे स्वीकार करने की स्थिति में वहमन की समस्या अब भी होवी है, नहीं वह भी वैसे ही न होकर गायब हो जाती है ।

ऐसी स्थिति में सब अपने आप कार्यान्वित होकर प्रवाह बनकर अपने आप सुधारने की स्थिति बन जाती है ।

योगा माने हमारे मन को हयून करना है । जब तक ट्यूनिंग है तब तक हमारा मन अच्छी स्थिति में है । उसके अन्त होने श्पर जहाँ से खाना हुआ वहीं फिर आ जाते हैं ।

हमारी समस्याएँ हमारे लिए प्रतीक्षा करेंगी । ट्यूनिंग से छूटते ही हमारी समस्याएँ हमें पहुँचेंगी । योग हमारे लिए अच्छे नींव बना देता है । पर उसे भी पार कर करने के लिए कुछ भीवहीं है ऐसी स्थिति में हमें आना है । मन की समस्याओं के प्रति हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं । ऐसे समझ लेने पर समस्याएँ आयी वे अपने आप गायब होती है ।

करने कुछ भी नहीं है इसलिए हमें ऐसे समझना गलत है कि कुछ भी किए बिना चुपचाप रहेंगे ।

बुद्ध एक देश को आते है । राजसभा के लोग पूछते हैं, " आप शिष्यों की भलाई के लिए कई उपदेश देते हैं । हम परिवार के साथ रहते हैं । हमारे लिए उपयोगी उपदेश दीजिए " ।

बुद्ध कहते हैं, " हमारा मन है, शरीर भी है । दोनों से क्रिया – न्वित होना है । मन जितनी अचेत होता है उतनी तन्दुरुस्त होता है । शरीर जितना काम करता है उतना तन्दुरुस्त बनता है " ।

उसी प्रकार हमारे मन के कुछ अंश भी ठीक कराना है । पर मन के स्वभाविक बुरे अंश अगर हम बदलने का प्रयत्न करें तो वह और भी बुरा बन जाता है । मन का स्वभाव तभी ठीक होते हैं जब सोचते हैं ही मन करने कुछ नहीं हैं इससे हम छुप रहेंगे । उसी प्रकार देश में व घर में सुधारने योग्य अंशों को हमें योजना बनाकर प्रयास करके सुधारना चाहिए । अगर हम कुछ भी नहीं करते हैं तो घर की चारों ओर नाले ही बहेंगे । घर भर मच्छर ही मच्छर होंगे । रास्ता ही नहीं होगा । बाहरी कार्यों को हमारे प्रयत्न व परिश्रम से ही सुधार सकते हैं ।

समस्याएँ तभी ज्यादा होती है जब बाहरी रूप में हम कुछ भी नहीं करते हैं । आन्नारिक समस्याएँ तभी ठीक हो जाती है जब हम आन्नारिक स्तर पर कुछ भी नहीं करते हैं ।

किसी चीज को प्राप्त करना है तो अभ्यास और प्रयत्न की आवश्यकता होती है ।

पर प्राप्त करने कुछ भी नहीं है – ऐसी स्थिति में समझ लेना ही काफी है । उसे क्रियान्वित करने की आवश्यकता नहीं है । वह अपने आप बनने वाली आटोमेटिक प्रोसेस हो जाता है ।

करने कुछ भी नहीं है । सिर्फ इसे जान लेना ही हमारा काम है । उन दिनों के शास्त्र हमें मार्ग दर्शन करते हैं । कई उपदेश देते हैं । पर वे उसे न बाँटे हैं ।

कालकुलेटर की उपयोगिता से एक गणित करते है तो जवाब मिलेगा । जवाब ठीक ही होगा । पर जवाब कैसे मिला – यह नहीं समझ सकते हैं तो अपनी योजनाओं के लिए उसका प्रयोग नहीं कर पाते हैं ।

पर आप यह गणना उसकी रीति से हल करने समझ लेंगे तो वह आपके मन की गति से मेल करेगा ।

मन ही मन हमें करने के शलिए कुछ भी नहीं है । इस बात को कारण कार्य से भाँटकर समझ लेंगे शतो, सभीअपने आप कार्यान्वित होकर अपने आप गायब हो जाएँगे – इस सत्य को जान लेते है ।

हर एक क्षण में हमें एक एक अभुभव होता है । हर एक परिस्थिति में अनुभव हैं । मन से संबन्धित अनुभव होते ही रहते हैं । उन अनुभवों के प्रति कुछ भी किए बिना बाहरी कार्यों में लग जाते हैं तो वही काफी है । अन्तकरण की ओर से हमें करने कुछ भी नहीं है स्थिति में वह अपने आप सुधर लेता है । मन की ओर से हमें करने कुछ भी नहीं है ।

गणित को ठीक तरह से समझ लेने के जैसे जान लेना ही काफी हैं । अनुकरण करने की आवश्यकता नहीं है ।

ऐसा रख लीजिए कि हम एक स्वप्न देखते हैं । हमें प्यार से रहना चाहिए । किसी से क्रोधित न होना—ऐसे विचार में रहते हैं ।

पर स्वप्न में हम किसी को क्रोध में मारते हैं । यह स्वप्न ही है । इस स्वप्न के लिए आप क्या करनेवाले हैं ? स्वप्न के संबन्ध में हमने कुछ भी नहीं किया ।

स्वप्न के जैसे हमारे मन में भी मन का अनुभव बनते आ रहे हैं । दोनों में भिन्नता नहीं है । स्वप्न खतम हो चुका है । अनुभव भी खतम हुआ है । वह सखतम होकर वैसे ही चलता रहता है ।

जो गलती स्वप्न में हुई आप स्वप्न में मार खाए मनुष्य से जागृत अवस्था में जाकर माफ नहीं माँगते हैं । उस अनुभव की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता नहीं है । अपने आप आकर खुद चला जाता है । हम जिम्मेदारी न लेने के कारण वह अपने आप गायब हो जाता है । इस तरह अपने आप हल होने के कारण यह साबित होता है कि कि अपनी ओर से प्रयास करके कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है ।

आप इसे समझ लेते हैं तो आपने जिसको समझ लिया वह ऐसा हो जाएगा कि जैसे कठिन प्रयास करके ज्ञानियों ने समझ लिया । इसे आप कठिन परिश्रम करके जाँच लेने की आवश्यकता नहीं है । यहाँ हमें से समझ लेने की बात वही है — इसे आप अपने आप जाँच करके देखना काफी है । उन बहुत बड़े ज्ञानियों ने जिसकां समझ लिया है उसे आप भी समझ लिए होंगे ।

इसके लिए अभ्यास की या प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है । ध्यान और योग दोनों के लिए अभ्यास और कोशिश करना चाहिए । यहाँ समझना ही काफी है । समझ लेना ही काफी है । बिना किसी प्रकार के अभ्यास या प्रयत्न के सब अपने आप हों जाते हैं ।

आप अपने आप ज्वलंत—दीप बन जाएँगे ।

मेरे ख्याल में मैं, आपका दोस्ता ही हूँ ।

ऐसे रख लीजिए कि हम छात्र होकर अध्यापक से पाठ सीख लेते हैं । अध्यापक गणित पाठ चलाते हैं । हमें आधा जाने अनजाने रहते हैं ।

हम क्या करते हैं ? अध्यापक के चले जाने पर सह पाठियों से पूछते हैं । जो छात्र समझ लिया है हमें उसे अपने मार्ग में बताकर हमें समझा देता है ।

ऐसे सहपाठियों की योग्यता से ही मैं अपने स्पष्ट विषयों को आपसे बाँट देता हूँ । कई प्रकार के राय, उपदेश, अभ्यास आदि में मुठभेद होने से जो जानकारी हुई उसे आपसे बाँट लेता हूँ ।

जिसको हमें विशेष रूप से जान लेना है उसे समझने पर आगे चलकर समझने के लिए कुछ भी नहीं है ।

ध्यान—अभ्यासों में हमें अच्छे प्रकार के अनुभव मिलते हैं । पर निश्चित काल के बाद गायब हो जाएगा । पर सिर्फ जानकारी प्राप्त करना — यही हमें समझ लेना है कि यही जानकारी हमें प्राप्त करना है । यह समझते हैं तो यही जानकारी है ।

फिर वह समझ आपसे नहीं चला जाएगा । समझ लेने के बाद कोई भी शकाम नहीं है । जानकारी के साथ सभी काम खतम हो जाते हैं । यह जानकारी अपने आप क्रियान्वित होनेवाला अंश का काम करता है । उस स्थिति में आप अपने लिए ज्वलंत दीप बन जाते हैं । फिर आपको किसी का मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं होता है ।

उसके बाद किस घटना से कौन से अनुभव प्राप्त हुए हैं ठीक है वह घटित स्वप्न के जैसे चाहे वह सुख भी हो या दुःख भी हो मुख्यात्व खो देते हैं । आपको उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती है । समाधान करने की जरूरत भी नहीं है । स्वप्न को हम कैसे हल कर सकते हैं ?

हमारी समस्याओं से छुटकारा पाना घटित स्वप्न से छुटकारा पाने के जैसे ही है । सिर्फ यही समझना काफी है कि वह स्वप्न है । वह अपनी गति में चलता रहेगा ।

हमारे दिन बदिन के जीवन के लिए हमें बुद्ध की उपयोकिगता करना है ।

अगर हम मन की चिन्ता की दूर करने प्रयत्न करें तो वह हमारे मनोभाव को और झटिल करा देती है । हमें उसके संबन्ध में करने कुछ भी नहीं है – ऐसे जान लेते समय सब ठीक होकर सुधार लिते हैं । वहाँ हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है । इसे अपने में समझ लेने की स्थिति में आप खुद ज्वलंत दीपक बन जाते हैं ।

ऐसी स्थिति में बाकी लोगों के प्रकाशित करानेवाली शक्ति भी आपको मिल जाती है । आपको ऐसे ही स्वीकार करके आपके विपरीत संग्राम न हरे तो आप सब अभी ज्ञानी ही है ।

यही काफी है कि आपको संग्राम करने की जरूरत नहीं है । हम जिस अवस्था में है वह ज्ञान की आवस्था है । ज्ञानावस्था याने एक पेक्यूलियर स्थिति विनोद मय अतीत की स्थिति है । ऐसे सोचने तक हम किसी एक चीज की खोज करते ही रहेगे ।

हम जिस स्थिति में हैं वही ज्ञान-स्थिति – ऐसे हमें अपने आप विश्वास रखना काफी है ।

बुद्ध और हममें तुलना कर सकते हैं ? भगवान रमण और हममें तुलना कर सकते हैं ? ऐसे अपने आप अपने को तुच्छ समझना नहीं चाहिए

वे किसी एक तरह से प्रसिद्ध होने के कारण ही महान माने जाते हैं ।

आराभ में नींव में वे भी आप के जैसे अपने आप को पूर्ण रूप में स्वीकार कर लिए है । वे अपने आप को या खुद का सामना नहीं करते या विपक्ष में संग्राम नहीं करते हैं ।

आपको बदलने के लिए किसी की खोज में दौड़ने की आवश्यकता नहीं – ऐसे आप छद रहेंगे तो वही काफी है । सभी परिवर्तन अपने आप हो जाएगा । आपके कार्य अपने आप एक नहीं के जैसे बहकर खुद को शुद्ध कर देगा ।

आप एक पुनित प्रवाह बन जाएँगे ।

आपकी कार्य ही एक अनोखा –पुनित कार्यवाही बन जाता है ।

श्री भगवत जी से सीधा सपर्क करके अपने संदेह दूर करने सपर्क रखने का पता :-

श्री भगवत

102 (कोर्ट वीथी) नीतिमनड्र वीथी,

तिरुच्चेन्दूर – 628 215

फोन: 04639 – 245377, 99442 15677